

इंसान अगले एक हज़ार साल तक ज़न्दि नहीं रह पाएगा!

"हमारा ब्रह्माण्ड रहस्यों एवं जटिल संरचनाओं से भरा पड़ा है। वजिज्ञान इन रहस्यों की परते खोलने के लिये सतत् प्रयत्नशील है। जब तक ये रहस्य सुलझ नहीं जाते परकिल्पना ही लगते हैं, और जब सुलझ जाते हैं तो वास्तविकता बन जाते हैं। इस तरह से देखें तो 'परकिल्पना' और 'वास्तविकता' के बीच ज़्यादा फर्क नहीं है; देखते-ही-देखते परकिल्पनाएँ वास्तविकता में तब्दील हो जाती हैं।"

बहुत पहले बुद्धजीवियों के मन-मस्तक में एक सवाल उठता था कि 'पृथ्वी पर इंसान की उत्पत्ति कैसे हुई?' इसके बारे में तमाम वैज्ञानिकों ने अपने-अपने विचार प्रस्तुत किये और सदिधांत गढ़े। इसी सवाल की तरह आज एक गंभीर समस्या मानव के समक्ष खड़ी है कि क्या इंसान अगले एक हज़ार वर्षों तक ज़न्दि रह पाएगा? आज अगर ये सवाल हम सबके दमिग में घूम रहा है तो इसके पीछे की वास्तविकता यह है कि इस स्थिति को जन्म देने के लिये हम सब ज़मिमेवार हैं।

"पृथ्वी के पास हमारी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिये पर्याप्त संसाधन हैं, न कि हमारे लालच को पूरा करने के लिये।"

गांधीजी का उपर्युक्त कथन इंसान द्वारा उपभोक्तावाद की मांग के लिये किये जा रहे प्रकृति के दोहन को रेखांकित कर रहा है। अनादिकाल से जब इस पृथ्वी का निर्माण हुआ व इस पर रहने लायक अनुकूल दशाएँ वदियमान हुईं तब मानव सभ्यता का जन्म हुआ। धीरे-धीरे प्रकृति ने मानव को इस बहुत कुछ दिया, लेकिन अपने स्वार्थपूर्ति के लालच में इंसान ने प्रकृति का इस कदर वदोहन किया कि उसने अपने अस्तित्व के लिये ही एक गंभीर संकट पैदा कर दिया है। आज जो पर्यावरणीय क्षति हो रही है उसका एकमात्र कारण हमारी मानसिकता है; हम सोचते हैं कि मैं जीवति हूँ, मेरी सुख-समृद्धि बढ़े ताकि मैं ज़्यादा-से-ज़्यादा सुख-सुवधाओं का उपभोग कर सकूँ। नरितर बढ़ रहे पर्यावरण प्रदूषण, जल स्रोतों की कमी, प्राकृतिक संसाधनों तथा जैव विविधता में आ रही कमी से आज हमारे माथे पर एक चिंता की लकीर खिंची रही है। अगर समय रहते इनका उपाय न किया गया तो इंसान का अस्तित्व भी समाप्त होने से कोई नहीं बचा सकता।

ये बात हम सब अच्छी तरह जानते हैं कि "प्रकृति का कोप सारे कोपों से बढ़कर होता है।" मनुष्य ने अपनी आर्थिक विकास और उन्नति के लिये पर्यावरण को इस हद तक बगाड़ दिया कि अब वह और छेड़छाड़ बर्दाश्त नहीं कर पा रहा है। आँकड़े बताते हैं कि पिछले दो दशकों में दुनिया भर में आने वाली प्राकृतिक आपदाओं में चार गुना बढ़ोतरी हुई है। यानी मानव अस्तित्व पर कुदरत का कहर कभी भी अपने एक भयानक रूप में आने को तैयार है। अगर समय रहते हम इस कुदरत की चेतावनी को न समझ पाए तो अपने अस्तित्व पर संकट के लिये तैयार रहें।

आज समूचा विश्व पर्यावरण असंतुलन के चलते अनेकानेक समस्याओं से जूझ रहा है। स्वार्थी मनुष्य नरितर प्रकृति का दोहन कर रहा है और ऐसा करते हुए उसका आचरण प्रकृति विरोधी हो चुका। जिस धरा को हम धरती माता कहकर संबोधित करते हैं, उसी धरा की छाती को स्वार्थ में अंधे होकर छलनी कर डाला। इस संदर्भ में, मेरे मानस पटल पर महान कवयित्री महादेवी वर्मा की ये पंक्तियाँ चित्रित होती हैं-

"कर दिया मधु और सौरभ दान सारा एक दिन

कनितु रोता कौन है तेरे लिये दानी सुमन

मत व्यथित हो फूल, कसिको सुख दिया संसार ने

स्वार्थमय सबको बनाया है यहाँ करतार ने।"

उपर्युक्त पंक्तियाँ प्रकृति मानव के अस्तित्व के बीच एक जीवंत चित्र खींचती हैं।

इतिहास बताता है कि मानव ने दो विश्व युद्ध लड़े हैं और इन दोनों विश्व युद्धों में बड़ी संख्या में लोगों की अकल्पनीय क्षति हुई है। हमारे वैज्ञानिकों, भौतिकविदों व इतिहासकारों ने भविष्यवाणी की कि अगला विश्व युद्ध हुआ तो वह 'जल' के लिये होगा अर्थात् इसके बनिा मानव का अस्तित्व एक हज़ार साल की बात छोड़िये, एक दिन भी दुष्कर है। आज स्थिति ये है कि विश्व की आधी से अधिक जनसंख्या स्वच्छ पेयजल को तरस रही है, भारत भी इससे अछूता नहीं है। यहाँ की प्राणदायिनी, मोक्षदायिनी गंगा सहित तमाम जीवनदायिनी नदियाँ प्रदूषित हैं व अपने अस्तित्व को लेकर जंग लड़ रही हैं। यह एक कटु सत्य है कि अगर जल नहीं होगा तो मानव सहित पृथ्वी पर समस्त जीव जातियों का अस्तित्व भी समाप्त हो जाएगा। बड़े शर्म की बात है कि मनुष्य ने जल जैसी अपरहिर्य सम्पदा का दोहन इस कदर किया है कि भूमिगत जल स्तर को एक खतरनाक स्थितिक पहुँचा दिया।

"प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी का कहना है कि अगर समस्या है तो समाधान भी होगा" लेकिन समस्या का समाधान समय रहते कर लिया जाए तो बेहतर है, नहीं तो गम्भीर दुष्परिणाम भुगतने के लिये तैयार रहें। जल के बचाव के लिये विभिन्न संस्थाओं, युवाओं व ग्रामीण आबादी को जागरूक करके जल को बचाया जा सकता है तथा विश्व पटल पर एक सकारात्मक संदेश दिया जा सकता है। जल संकट की स्थिति को देखते हुए मुझे एक एक शेर समीचीन जान पड़ता है-

"सारे जग की प्यास बुझाना इतना आसां काम नहीं,

बादल को भी भाव में ढलकर पानी बनना है।"

वर्तमान में पूरा विश्व अनेक उथल-पुथल की घटनाओं से सबको हैरत में डाल देता है, जनिमें प्रमुख रूप से आतंकवाद के वभिन्न संगठन अलकायदा, आईएसआईएस व लश्कर-ए-तोयबा इत्यादि संगठन विश्व शांति को छीन रहे हैं व खुद अपने अस्तित्व पर एक प्रश्नचिह्न खड़ा कर रहे हैं।

वही दूसरी ओर, पूरे वैश्विक जगत में शस्त्रास्त्रों की होड़ परमाणु बम के हमले की आशंका, ताकतवर देशों द्वारा कमजोर देशों के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप की बढ़ती प्रवृत्ति तथा क्षेत्रीय विवादों ने मानव अस्तित्व की परिकल्पना को खण्डित किया है जिससे असंतुलन की स्थिति उत्पन्न हुई है।

अमेरिका में नए राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प के निर्वाचन होने से एक नया घटनाक्रम देखने को मिला क्योंकि उनके द्वारा कुछ निर्णय विश्व घटनाक्रम पर प्रभाव डाल रहे हैं, और कहीं न कहीं मानव अस्तित्व की अस्मिता पर भी प्रभाव डालेंगे।

इस प्रकार, हम इस नषिकर्ष पर पहुँचते हैं कि इन सब चुनौतियों व विवादों के फलस्वरूप मानव अस्तित्व अपने आप को बचाने में काफी हद तक सफल हो सकता है। फ्रांस के विश्व विख्यात लेखक वक्टीर ह्यूगो ने कहा था कि "जिस विचार का समय आ गया हो, उसे कोई हाशिये पर नहीं डाल सकता।" अर्थात् मानव को अपने अस्तित्व को बचाने के लिये एक-साथ पूरे विश्व को एक माला के रूप में परिीकर विश्व शांति का संदेश देकर व भाईचारे, आपसी सौहार्द्र, न्यायोचित वितरण, प्रकृति से लगाव, मनुष्य के प्रतियोगिता इत्यादि भावदण्डों को अपनाकर अपने अस्तित्व को व आने वाली पीढ़ी के लिये एक सुरक्षित माहौल तैयार करना होगा, तभी हम बहुत हद तक अपने अस्तित्व को बचा सकते हैं।

इस समय, पूरे विश्व को भारतीय दर्शन के इस आदर्श-वाक्य को आत्मसात् करना होगा-

"सर्वे भवन्तु सुखिनि: सर्वे सन्तु नरिमया।

सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, माँ कश्चिद् दुःखभागवेत्।।

अर्थात् सभी सुखी हों, सभी नरिीग हों। सबका कल्याण हो, कोई दुःख का भागी न हो।

PDF Refernece URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/humans-will-not-be-able-to-survive-for-another-thousand-years>

